

AdityaharShaNastotraM sArtham

——
आदित्यउर्षास्तोत्रं सार्थम्

——
Document Information



Text title : AdityaharShaNastotraM sArtham

File name : AdityaharShaNastotraMsArtham.itx

Category : navagraha

Location : doc_z_misc_navagraha

Author : Kaushalendra Krishna

Latest update : December 8, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 8, 2023

sanskritdocuments.org



आदित्यउर्षास्तोत्रं सार्थम्



वैष्णवानां हरिस्त्वं शिवस्त्वं स्वयं
शक्तिरूपस्त्वमेवानयस्त्वं नतेः ।
त्वं गणेशिकृतस्त्वं सुरेशाधिप-
स्त्वं मरुत्वान्नविस्त्वं सदा स्तोयताम् ॥ १ ॥

त्वं सदा लोककल्याणकृन्मण्डलः
ताप्यमानो जगद्भूतिसिद्धयै नभे ।
राति रात्र्यै निविष्टाभमग्निं तथा
द्वादशात्मन् सदाऽऽनन्दमग्नौ भव ॥ २ ॥

जन्ममात्रेण यासक्तिग्रस्तो वयं
शाम्भरीबन्धने विस्मृताश्चारिणः ।
भक्तिभावेन डीनाय जोषालयोऽ-
र्कादितेयोष्णरश्मे प्रसन्नो मयि ॥ ३ ॥

अकृतार्थाय ब्रह्माण्डसाद्गुस्तथा
तायको विष्णुरूपेण कल्पान्तरे ।
यो मडाऽन्ते शिवश्चाण्डनीलो नटो
दक्षजाडुगप्रभस्त्वं सदा रोयताम् ॥ ४ ॥

ब्राह्मणो बालुजोऽन्याश्च वर्णाश्रमा
ब्रह्मचर्याद्यातित्वो लृषीके ध्रुवः ।
धर्मकामादिरूपेण यावस्थितः
प्राणतत्त्वो महेन्द्रः प्रसन्नोऽवतु ॥ ५ ॥

अस्मदार्यार्थप्रोक्तं प्रमाणं परं
यायकः पादपद्मानुकम्प्यास्तव ।
स्वस्थ जन्मान्तराभ्यङ्गमुक्तास्तदाऽ-
नर्लज्जवस्तु ऋच्छामि धामं कथम् ॥ ६ ॥

शौचमाथारमस्मत् प्रमुक्ताः कृताः
स्वात्मघर्माद्धिमुक्तास्तु पापे रताः ।
केवलं कुक्षिपूर्तेर्वयं याजका
डेडधमोद्धारणस्तृथ्यतात्तापनः ॥ ७ ॥

पूजितो दस्रताता-ववायैस्तथा
ऋयजुर्वेदसामं यतुर्थी यथा ।
आगमाः पञ्चकालैर्कमे वेदक-
स्त्वं विडङ्गः सदाऽऽनन्तितोऽस्मासु छि ॥ ८ ॥

सप्तलोकार्णवाश्रान्तरिपाः स्वर
योगिनो रश्मयः सप्तधाऽऽरोपितः ।
औषधेश्छन्दभावेऽन्नगोमारुतैः
पालकादित्य संज्ञापते रोच्यताम् ॥ ९ ॥

डौशलेन्द्रकृतस्योषणरश्म्यर्पित-
-स्याग्रतः सूर्यवर्णस्य उत्कूजकः ।
दर्षितो वाद्ययन्त्रादिभिर्भूषितोऽ-
न्तत्यडार्या गतिं सूर्यतत्त्वां पराम् ॥ १० ॥

॥ छत्याचार्यश्रीडौशलेन्द्रकृष्णशर्मणा
विरचितमादित्यदर्षणं सम्पूर्णम् ॥

छिन्दी अर्थ -

वैष्णवों के आप डी छरि हैं, आप डी शिव हैं तथा आप डी शक्तिस्वरूप हैं । आप डी समस्त नमस्कारों के परम
भाज्य (गन्तव्य) हैं । जो गणेश भी हैं, तथा देवाओं के अधिपति के भी अधिपति हैं । जो छन्द्र भी हैं, वे रवि
सदा (डमपर) प्रसन्न छों ॥ १ ॥

आप लोककल्याण करने छेतु तत्पर स्वरूप वाले नित्य डी संसार डी कीर्ति छेतु जलते डी रहते हैं । उससे अर्जित
आभा डो आप रात्रिकाल में अग्नि डो दे देते हैं । छे बारछ स्वरूपों वाले! आप सदा आनन्धित रहें ॥ २ ॥

जन्म लेने मात्र से डम सब आसाक्तिग्रस्त छुअे ज़ुव माया के बन्धन में (आपको) भूले छुअे सेवक हैं । (तथापि)
आप भक्तिभाव से डीन छेतु भी आनन्द के सागर! अदितिनन्दन! तीव्र रश्मियों वाले! सूर्य! भुञ्जपर प्रसन्न छों
॥ ३ ॥

कल्पान्तर के बाद अकृतार्थं हेतु ब्रह्माण्ड को सिद्ध करने वाले (ब्रह्मा) तथा विष्णुरूप में उनके पालन करने वाले । जो महाप्रलय काल में यण्डनील शिव छोकर नृत्य करने वाले हैं, वे दक्षपुत्री अदिति के पुत्र कृपा करें ॥ ४ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा अन्य वर्णश्रम ब्रह्मवर्च से संन्यासपर्यन्त, धन्त्रियों की ऐकस्थता तथा धर्म, कामादि (पुरुषार्थों) के रूप में अवस्थित रहने वाले सर्वप्राण स्वरूप महेन्द्र! आप प्रसन्न हों ॥ ५ ॥

हे विष्णु! हमारे आचार्यों के द्वारा जैसे कडा गया है कि जो आपके चरणकमल के याचक तथा करुणा प्राप्ति के योग्य हैं, वे अपने जन्मान्तर के यक से मुक्त हो जाते हैं । तब मैं अयोग्य जूव आपके धाम तक कैसे पहुँचूँ? ॥ ६ ॥

हम हमारे शौच तथा आचार को त्यागे डुबे, स्वधर्म से विमुक्त तथा पाप में रत हैं । केवल कुक्षि पूर्ति के लिये ही हम कर्म करते हैं । हे अधर्मों का उद्धार करने वाले! हे तापन! आप हमसे सन्तुष्ट होइये ॥ ७ ॥

हे दस्र (अश्विनीकुमार) के पिता! आप सदा ही वैवस्वतों (अपनी सन्तानों) से पूजित हैं । जो पाण्ड्य कालों के द्वारा ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद तथा आगमों के क्रम में विद्यमान रहने वाले हैं, वे षण्ड के समान आकाशाचारी हमपर सदा ही आनन्दित रहें ॥ ८ ॥

जो समलोक, समुद्र, द्वीप, स्वर, ऋषि, रश्मि के रूप में आरोपित हैं । जो समौषधि, सप्तछन्द के भाव से विद्यमान हैं तथा जो अन्न, जल, वायु के द्वारा सबका पालन करने वाले हैं, वे संज्ञापति आदित्य कृपा करें ॥ ९ ॥

कौशलेन्द्रकृष्णशर्मा द्वारा रचित तथा उष्णरश्मि सूर्य हेतु अर्पित इस स्तोत्र को जो भी श्री सूर्यनारायण के सम्मुख आनन्दित होकर वाद्ययन्त्रों सहित मधुर गाता है, उसे अढार्य तथा परम सूर्यतत्वयुक्त गति प्राप्त होती है ॥ १० ॥

इस प्रकार आचार्यश्री कौशलेन्द्रकृष्ण शू के द्वारा लिखा आदित्यदर्षणस्तोत्र (सूर्यदर्षण) पूर्ण हुआ ।

AdityaharShaNastotraM sArtham

pdf was typeset on December 8, 2023

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

